साहित्यसंहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

कहते है बच्चें गली के

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

कहते है बच्चें गली के
क्या महत्व है साक्षरता रैली के
नहीं पूछता है हमें कोई रैलियों में
नहीं प्रबहत फेरियों में
नहीं कोई हमें पढ़ता
नहीं कोई हमें चाहता
फिर कैसे जाने हम साक्षरता क्या होती
ये आकाश में उड़ती या खेतों में उगती
हमें भला पूछेगा कौन?
इसीलिए रहते है मौन
हमारी कपड़े देख हमें दुत्कारते
प्यार के दो शब्द न बोलना चाहते
वही हमारी कल्याण की बातें करते
निति बनाते और भाषण देते
जाति धर्म पूछ कर करते है दाखिला
देख हमें वो हो जाते आग-बबूला
तो पढ़ायेगा कौन
हमें सिखलाएगा कौन
हमारे घर परिवार में पैसों की कमी
करते है सेठ, जमींदारों की गुलामी
और सुबह शाम उनकी सलामी
हम अपनी दिक्कत बताये क्या
कमाएंगे नहीं तो खायेंगे क्या
अपना भी मन करता है
पढने का कुछ करने का
अपना दिल तो रो पड़ता है

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

देख अमीरों के बच्चों को
जो कूदते फांदते जाते है स्कूल
पीठ पे रंग विरंगी बस्ता टंगे
रहते है वो आगे
और उनके पीछे
माँ-बाप दये बाये
हाय!
हम उन्हें निहारते
स्कूल आते जाते
देखकर रह जाते दंग
अपना ध्यान हो जाता भंग
होटल के मालिक डांटें
पालिश लगवाने वाले बाबु
गली देने लगते
एक अठन्नी दो चवन्नी
हवा में उछल देते
अपनी येही कहानी
अपनी यही जिंदगानी

(मलिन बस्ती के बच्चों की भाव को आप के समक्ष प्रस्तुत किया ताकि आप में से कोई शिक्षक, समक सुधारक या निति निर्माता बने तो उनका भी ख्याल रखे. जय हिंद!)